# मध्य गुजरात में गांधीजी

**डॉ. मोतीभाई देवु***
**डॉ. लक्ष्मणभाई रबारी****

जनवरी 1915 में गांधीजी दक्षिण अफ्रिका से भारत लौट आए और उसके बाद से वे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गए। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष में उन्होंने अपना बाकी का जीवन लगा दिया। इस कार्य के लिये 1915 से लेकर मृत्युपर्यन्त उन्होंने अपनी यात्राएँ जारी रखी। भारत के लगभग प्रत्येक भाग में उन्होंने यात्राएं की। गुजरात में भी वे लगातार यात्रा करते रहे। प्रस्तुत शोध पत्र में गांधीजी के द्वारा की गई गुजरात की यात्राओं में विशेष रूप से मध्य-गुजरात में की गई उनकी यात्राओँ का विश्लेषण किया जाएगा।

मध्य-गुजरात में गांधीजी के द्वारा की गई यात्राओं की वजह से ही वहाँ के लोगों को तत्कालीन औपनिवेशिक सरकार के विरूद्ध संघर्ष करने का एक सशक्त माध्यम 'सत्याग्रह' प्राप्त हुआ था। इसी क्षेत्र से गांधीजी को अनेक सहयोगी भी मिले जो कि आजीवन गांधीजी के साथ रहे और राष्ट्र सेवा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। मध्य-गुजरात में वर्तमान गुजरात के खेड़ा, आणन्द और वडोदरा जिले शामिल हैं। वर्तमान आणन्द जिला पूर्व में खेड़ा जिले का ही हिस्सा था लेकिन 01-10-1997 में राज्य में छः नए जिलों का निर्माण किया गया तब आणन्द जिला अस्तित्व में आया। वर्तमान में खेड़ा और आणन्द जिले का कुछ क्षेत्र चरोत्तर के नाम से जाना जाता है। इसी तरह से वडोदरा का भी अपना अलग इतिहास रहा है। वडोदरा एक रियासती क्षेत्र था जो कि गायकवाड़ राज्य की राजधानी था। वर्तमान में इन तीनों जिलों को गुजरात के हरित जिलों के रूप में माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्तमान के इन तीन जिलों के क्षेत्र को मध्य-गुजरात के रूप में चिन्हित किया गया है। भारत वापसी के पश्चात से लेकर 1948 तक गांधीजी ने मध्य-गुजरात में अनेक यात्राएँ की। इस समयकाल में गांधीजी के द्वारा भ्रमण किये गए मध्य-गुजरात के स्थल इस प्रकार हैं -

अजरपुरा, आनंद, आंकलाव, उत्तरसंडा, उमरेठ, अकलाचा, ओड,

कठलाल, कथाना, कपड़वंज, कंकापुरा, करमसद, कासोर, खांधली, खेड़ा, गोविंदपुरा, चिखोदरा, डभान, डाकोर, ढठाल, धुंधाकुवा, तोरणा, दंतेली, डेडरडा, धर्मज, नडियाद, नवागाम, नापा, नायका, नावली, पांडोली, पालज, पिज, पेटलाद, बोचासन, बोदाल, बोरसद, बोरियावी, भादरन, मेहमदावाद, मातर, रास, लांभवेल, लिंबासी, वडताल, वडथल, वडोदरा, वसो, वहेरा, वासना (बुजर्ग) , वासना, वासद, वीरसद, संदेसर, समरखा, सिहुज, सुनाव और सोजित्रा आदि शामिल हैं।

गांधीजी की मध्य-गुजरात की यात्राओं में सबसे पहली यात्रा रेलवे यात्रा के दौरान मेहमदाबाद की थी और अन्तिम यात्रा अब्बास तैयबजी के परिवारसे मिलने के लिये वडोदरा की थी। गांधीजी ने मुख्य रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में ही मध्य-गुजरात की यात्राएँ की। ये यात्राएँ अनेक कारणों से की गई थी। इनमें कतिपय कारण निम्नलिखित हैं -

- रेल यात्रा के दौरान
- खेड़ा सत्याग्रह के दौरान
- सैन्य भर्ती के दौरान
- असहयोग आन्दोलन के दौरान
- दांडी कूच के दौरान
- नागरिक कानून के तहत नाकर की लड़ाई के दौरान
- प्लेग महामारी की रोकथाम के दौरान
- अन्य सामयिक दौरे

## 1. रेल यात्रा के दौरान मध्य-गुजरात की यात्राएँ

गांधी जी के द्वारा मध्य-गुजरात में 1915 ई. से 1948 ई. तक की रेल यात्रा के दौरान कुल 06 यात्राएँ की जिनमें मुख्य रूप से छः स्थान शामिल थे - महेमदाबाद, नडियाद, वडोदरा, वासद, आणन्द और नवी नावली का दौरा किया। ये यात्राएँ छः अलग-अलग वर्षों में की गई थी। ये यात्राएँ रेलवे में यात्रा करते समय स्टेशन पर रेलवे विराम के दौरान की थी और ये यात्राएँ अल्पकालिक थी।

(1) 1915 में महेमदाबाद[1] , नडियाद और वडोदरा[2]

(2) 1918 ई. में वड़ोदरा[3] और वासद[4]

(3) 1919 में वडोदरा[5] और नाडियाड[6]

(4) 1920 में आनंद[7]

(5) 1925 में वासद[8]

(6) 1931 में नवी नावली[9], वडोदरा और आनंद।[10]

## 2. खेड़ा सत्याग्रह के दौरान मध्य-गुजरात का दौरा

मध्य गुजरात के खेड़ा जिले में भारी बारिश के कारण फसल बर्बाद होने के कारण लगान टालने के लिए हुए **खेड़ा सत्याग्रह** का नेतृत्व गांधीजी ने किया। गांधी जी ने खेड़ा सत्याग्रह चलाने के लिए नडियाद में एक हिंदू अनाथालय में शरण ली। यह अनाथालय सत्याग्रह की प्रत्येक गतिविधि का केन्द्र था। फसलों का सर्वेक्षण करने के लिए गांधीजी ने व्यक्तिगत रूप से खेड़ा जिले के तीस गांवों का दौरा किया।[11] गांधीजी ने खेड़ा सत्याग्रह के दौरान सबसे अधिक मध्य गुजरात का दौरा किया था।

1918 ई.में खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने मध्य गुजरात में नडियाद, वडथल, कठलाल, नायका, नवागाम, आनंद, लांभवेल, उत्तरसंडा[12], कथाना, मातर, लिंबासी, करमसद, तोरणा, वासद, बोरसद, सिंहुज, अकलाचा, नावली, वडोद, ओड, दंतेली, चिखोदरा, रास, कासोर, अजरपुरा, समरखा, पंडोली, पालज, सुनाव[13], धुंधाकुवा, संदेसर, खांधली[14] और मेहमदाबाद का दौरा किया।[15]

खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने सबसे अधिक नडियाद शहर का दौरा किया, क्योंकि खेड़ा के संघर्ष का केंद्र नडियाद का हिंदू अनाथालय था। इसलिए संघर्ष के दौरान गांधीजी का निवास मुख्यत: नडियाद का अनाथालय ही था। गांधीजी सुबह नडियाद से खेड़ा जिले के गांवों में जाते थे और शाम को नडियाद लौट आते थे। इसलिए खेड़ा संघर्ष के दौरान नडियाद में सबसे अधिक दौरे हुए। वह करीब डेढ़ महीने तक नडियाद में रहे।[16]

खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने खेड़ा जिले में अनेक-विध कार्य किये। सर्वप्रथम तो खेड़ा जिले के लोगों को सत्याग्रह के रूप में एक सशक्त हथियार दिया जो कि सत्य एवं अहिंसा पर आधारित था। सत्य एवं अहिंसा के पालन का आग्रह रखते हुए सत्याग्रह को साध्य की प्राप्ति का एकमात्र साधन बताया।

खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने एक पुस्तिका गतिविधि चलायी। उनके द्वारा जारी की पत्रिका में से एक में किसानों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे

में बताया गया था[17], जबकि दूसरी पत्रिका में गांवों का दौरा करते समय स्वयंसेवकों को किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए, इसके बारे में बताया गया था।[18] खेड़ा जिले के किसान जो सरकार को राजस्व नहीं देना चाहते थे, उनके लिए गांधीजी ने एक प्रतिज्ञा पत्र तैयार किया और किसानों से उस पर हस्ताक्षर करवाए ताकि संघर्ष जारी रहे।[19] इसके अलावा खेड़ा सत्याग्रह के दौरान स्वदेशी, स्वावलम्बन, खादी, अस्पृश्यता निवारण, भाईचारा, अहिंसा, शिक्षा संबंधित प्रवृत्तियाँ, साम्प्रदायिक एकता, शराब छोड़ना, जैसी गतिविधियों को भी गांधीजी ने संचालित किया था।

गुजरात में गांधी जी के सत्याग्रह का यह पहला अवसर था। अत: संघर्ष के इस नये तरीके को देखकर लोगों में सत्याग्रह की लड़ाई की नई प्रथा का जन्म हुआ। गांधीजी को मध्य गुजरात से अनेक सहयोगी मिले। जिनके साथ गांधी जी जीवन भर निकट संपर्क में रहे और बाद में उन्होंने खेड़ा जिले में बड़े पैमाने पर गांधीवादी कार्यों और गतिविधियों को अंजाम दिया। खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी की यात्राओं ने लोगों में सत्य, अहिंसा, निर्भयता, एकता, साहस और आत्म-बलिदान के गुणों को विकसित किया और लोगों से नौकरशाही का डर दूर किया। सत्याग्रह लोगों का उस अनुशासन का प्रारंभिक अनुभव था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। गांधीजी ने खेड़ा के किसानों में अभय की स्थिति पैदा कर दी थी। उत्तरसंडा गाँव की एक महिला किसान ने अपने पति को स्पष्ट कह दिया था कि अगर वो सरकारी कर देंगे तो वो उनको घर में नहीं घुसने देगी।[20] इस तरह से गांधीजी की वजह से आमजन में अभय का प्रसार हुआ।

### 3. सेना में भर्ती के संबंध में मध्य-गुजरात की यात्रा

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार की मदद के लिए सेना में भर्ती का काम किया था। खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधी जी को खेड़ा जिले के लोगों का बहुत अच्छा समर्थन मिला, इसलिए गांधी जी ने सेना में भर्ती के काम के लिए खेड़ा जिले पर अपनी नजरें गड़ा दी थी।

इस कार्य के लिए उन्होंने 1918 ई. में मध्य गुजरात के वर्तमान खेड़ा और आनंद जिलों में कुल 7 स्थानों (गांवों/कस्बों) का दौरा किया। जिसमें नडियाद, खेड़ा, रास, नवागाम, कठलाल, करमसद और वडथल शामिल हैं।[21] गांधीजी ने भर्ती कार्य के लिए खेड़ा जिले में दो पत्रिका (पहली पत्रिका[22], दूसरी पत्रिका[23]) जारी की

और यह आशा भी व्यक्त की गई थी कि खेड़ा जिला और यहाँ के लोग सरकार को अधिक सैनिकों की आपूर्ति करेंगे। सेना में भर्ती करते समय गांधी जी गाँव-गाँव जाकर लोगों से सैनिक बनने के बारे में बात करते थे कि सेना में क्यों भर्ती होना चाहिये। इस संबंध में वे कहते थे कि ब्रिटिश साम्राज्य की मदद करने से हमें सैन्य प्रशिक्षण मिलेगा, सैन्य अनुभव मिलेगा। हमारे पास अपनी रक्षा करने की शक्ति होगी और स्वतंत्रता मिलने के बाद हम उस शक्ति से अपनी रक्षा करेंगे।[24] किन्तु खेड़ा जिले से सैनिक सहयोग अपेक्षा से बहुत ही कम प्राप्त हुआ। इस कार्य के दौरान लोगों का प्रतिभाव खेड़ा सत्याग्रह से अलग था। बहुत मेहनत के बाद गांधीजी को मध्य गुजरात से बमुश्किल एक सौ नाम मिले।[25] गांधीजी ने नडियाद में रहकर सेना में भर्ती के लिए काम किया। नडियाद के बाद दूसरे नंबर पर नवा गांव का नाम आता है। वहां वे चार दिनों तक सरदार पटेल के साथ रहे।[26] उपरोक्त दो स्थानों के अलावा, गांधीजी ने सैन्य भर्ती के लिए खेड़ा, रास, करमसद, कठलाल और वडथल का एक-एक बार दौरा किया।

## 4. असहयोग आन्दोलन के दौरान की गई यात्राएँ

1920 ई. में गांधीजी द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रव्यापी असहयोग आंदोलन की गूंज मध्य गुजरात में भी थी। असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी ने स्वयं खेड़ा जिले के 11 गांवों/कस्बों की यात्रा की और लोगों से पूरी तरह से असहयोगी बनने को कहा।

1920-21 ई.में असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी ने मध्य गुजरात में डाकोर, महेमदाबाद, नडियाद[27], उत्तरसंडा, बोरियावी, वडताल[28], आनंद, रास, बोरसद[29], कपडवंज और कठलाल का दौरा किया।[30]

असहयोग आंदोलन के दौरान मध्य गुजरात की अपनी यात्राओं के दौरान, गांधीजी ने लोगों को सरकार के साथ असहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए स्वदेशी अपनाओ, राष्ट्रीय शिक्षा, बिन-सांप्रदायिकता, निडरता, अस्पृश्यता का उन्मूलन, शराब पर प्रतिबंध और चरखा चलाने की गतिविधियों को अपनाने पर बहुत जोर दिया। गांधीजी द्वारा शुरू किया गया असहयोग आंदोलन खेड़ा जिले में रचनात्मक गतिविधियों से शुरू हुआ था। खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी के सहयोगियों और अनुयायियों के प्रयासों से खेड़ा जिले के अधिकांश गांवों में खादी,

कताई, अस्पृश्यता, बिन-सांप्रदायिकता, राष्ट्रीय शिक्षा, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार शुरू हुआ।

असहयोग आंदोलन के दौरान गांधी जी मध्य गुजरात के गांवों की यात्रा के दौरान तिलक स्वराज्य निधि एकत्र करते थे। इस समय में की गई 11 स्थलों की यात्राओं में सर्वाधिक नडियाद में तीन बार और बाकी 10 स्थलों में एक-एक बार यात्रा की। आणंद, रास, बोरसद और कपडवंज से तिलक स्वराज्य निधि भी जुटाई गई थी।

## 5. दांडी यात्रा के दौरान मध्य-गुजरात की यात्राएँ

गांधीजी द्वारा 12 मार्च 1930 ई.को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से शुरू की गई। यह ऐतिहासिक यात्रा 13 मार्च को खेड़ा जिले में प्रवेश कर के मध्य गुजरात के खेड़ा और आनंद जिलों के कुल 13 गांवों से होकर गुजरी। इस दौरान वे नवागाम, ढठाल, गोविंदपुरा, वासना, मातर, दभान, नडियाद, बोरियावी, आनंद, नापा, बोरसद, रास और कनकापुरा गांवों से गुजरे[31] जिसमें उन्होंने 05 गावो में दोपहर विश्राम तथा 06 गावो में रात्रि विश्राम किया। जबकि शेष 02 गांवों (ढठाल और गोविंदपुरा) की मुख्य सड़क से दांडी कूच होकर गुजरी थी। मौन दिन होने के कारण गाँधी जी आणंद में दो रात रुके।

नागरिक कानून के उल्लंघन के खिलाफ इस लड़ाई में गांधीजी ग्राम सभाओं में लोगों को कानून के उल्लंघन के खिलाफ लड़ाई के बारे में समझाते थे। सभाओं में गांधीजी लोगों को अन्यायपूर्ण नमक कानून के बारे में बताते थे। चरखा और खादी को सर्वत्र फैलाना, अस्पृश्यता निवारण पर जोर देना, शराब छोड़ने का संकल्प लेना, विदेशी कपड़ा बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा ग्रहण करना, पूर्ण स्वदेशी अपनाना, मुखिया-मतादारो का त्यागपत्र देना, सरकारी नौकरियाँ छोड़ना, संघर्ष का प्रचार, नमक पकाना आदि कार्य उत्साहपूर्वक किये गये।[32]

## 6. ना-कर संघर्ष के सविनय अवज्ञा के दौरान मध्य-गुजरात की यात्राएँ

1931 ई. में गांधी जी ने मध्य गुजरात के बोरसद तहसील में ना-कर आंदोलन के दौरान नागरिक कानून के तहत बोरसद, रास, सुनाव, पेटलाद, धर्मज, भादरन, विरसद, बोचासन, वासना, आंकलाव, नडियाद[33] और बोदाल का भ्रमण किया।[34] ना-कर के संघर्ष के दौरान बोरसद के किसान अपने खेत छोड़कर प्रवास के

लिए चले गये थे। गांधी-इरविन समझौते के अनुसार, गांधीजी ने स्वयं यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत कष्ट उठाया था कि बोरसद तहसिल के किसान अपनी क्षमता के अनुसार राजस्व का भुगतान करें।[35] ना-कर संघर्ष के दौरान, गांधीजी ने बोरसद तहसील के गांवों का दौरा किया और किसानों को कहा कि जो राजस्व का भुगतान कर सकते हैं वो करें और जिनके पास राजस्व का भुगतान करने के लिए कुछ भी नहीं था, वे ऋण लेकर भुगतान न करें। नाकर संघर्ष के दौरान गांधीजी ने बोरसद में रचनात्मक कार्य भी किये जिसमें स्वदेशीकरण, सामुदायिकता, अस्पृश्यता निवारण, राष्ट्रीय शिक्षा लेना, महिला शिक्षा इत्यादी शामिल थे। इस संघर्ष के दौरान गांधीजी ने मध्य-गुजरात में कुल 12 स्थलों का दौरा किया। इस समय में उन्होंने लगभग 40 दिन बोरसद में ही गुजारे। इस संघर्ष में ये किसी एक स्थल पर उनके द्वारा गुजारा यह सर्वाधिक समय था।

## 7. प्लेग निवारण के तहत मध्य-गुजरात की यात्रा

1935 ई. में बोरसद तहसिल में प्लेग का प्रकोप फैल गया। इसलिए गांधीजी ने प्लेग की रोकथाम के बारे में जनता में जागरूकता फैलाने के लिए बोरसद और अन्य प्लेग प्रभावित गांवों का दौरा किया। जिसमें बोरसद, वहेरा, डेडरडा, आंकलाव, बोचासन, पंदोली, और बोदाल का समावेश है।[36] गांधीजी ने प्लेग की रोकथाम के लिए बोरसद में एक सप्ताह तक काम किया। उन्होंने बोरसद में डेरा डाला और आसपास के गांवों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने लोगों को समझाया कि प्लेग से कैसे बचा जाए। गांधी जी ने प्लेग पीड़ित गांवों के लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। साथ ही खादी, अस्पृश्यता निवारण, कौमी-एकता आदि का भी प्रचार - प्रसार किया। बोरसद से गांधीजी ने डॉ. भास्कर पटेल के द्वारा तैयार की गई 'घर को चूहों से कैसे बचाया जाए' और 'मानव शरीर को बीमारी से कैसे बचाया जाए', इस बारे में कई पत्रिकाएँ निकाली। इस प्रकार, गांधी जी ने बोरसद में प्लेग को रोकने के लिए पत्रिका प्रवृत्ति भी की थी।[37]

## 8. अन्य सामयिक यात्राएँ

गांधीजी ने 1915ई. से 1948ई. की अवधि के दौरान उपरोक्त वर्णत अवसरों के अतिरिक्त अन्य अवसरों पर भी मध्य गुजरात के विभिन्न स्थानों का दौरा किया था। इन यात्राओं में 1915 में सोजित्रा और पेटलाद[38], 1916 में नडियाद[39], उमरेठ और डाकोर[40], 1917 में वडोदरा[41], 1919 में वडोदरा[42], 1920 में नडियाद[43],

1921 में नडियाद, बोरिआवी और करमसद[44], 1924 में सोजित्रा, पेटलाद, नडियाद, पिज, वसो, आंकलाव, बोरसद, भादरन, कथाना, विरसद, पंडोली, पालज, सुनाव और नापा[45], 1931 में बोचासन[46], 1935 में वडोदरा और रास[47], 1936 में नडियाद और वडोदरा[48] आदि का समावेश किया गया।

गांधीजी ने अन्य अवसरों पर मध्य गुजरात की अपनी यात्राओं के दौरान वहां विभिन्न संस्थानों का दौरा किया। जिसमें 1915 में सोजित्रा और पेटलाद में छात्रालय[49], 1916 में नडियाद में हिंदू अनाथालय, वनिता विश्राम ललिताश्रम[50], 1919 मे वडोदरा शहर में माणिकराव अखाड़ा, महाराजा मिल, महाराजा थिएटर, ब्रश फैक्ट्री, व्यायामशाला, अंत्यज शाला, खतरिओ की हथशाल[51], 1925 में उन्होंने सुनाव के राष्ट्रीय स्कूल[52] का दौरा किया, 1935 में उन्होंने वडोदरा में कारेलीबाग आश्रम और आर्य कन्या विद्यालय जैसे संस्थानों का दौरा किया।[53] गांधीजी की 05/06/1920 को नडियाद की यात्रा[54] और 08.09/10/1919 को वडोदरा की यात्रा के दौरान उन्होंने वहां स्वदेशी भंडार खोले थे।[55] गांधीजी ने उमरेठ में गोखले की एक मूर्ति का अनावरण किया और एक पुस्तकालय का उदघाटन किया।[56] गांधीजी ने बोचासन में वल्लभ विद्यालय[57] और नाडियाड में विट्ठल कन्याविद्यालय और फूलचंद बालमंदिर जैसे शैक्षणिक संस्थानों के उद्घाटन में भाग लिया।[58] अन्य स्थानों की यात्राओं में ऐसा प्रतीत होता है कि गांधीजी वहां के लोगों को राष्ट्रीय संदेश देने के लिए गये हैं।

## संदर्भ


1. चंदूलाल भगुभाई दलाल (संग्रहकर्ता), *गांधीजीनी दिनवारी,* सूचना विभाग, गुजरात सरकार, गांधीनगर, 1970 (प्रथम आवृत्ति), पृ. 2
2. वही, पृ. 5
3. वही, पृ. 61
4. वही, पृ. 63
5. वही, पृ. 74
6. वही, पृ. 76
7. वही, पृ. 111
8. चंदूभाई भगूभाई दलाल (संपा.), *महादेवभाईनी डायरी,* खण्ड-7,

साबरमती आश्रम ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1965, पृ. 138
9. *गांधीजीनो अक्षरदेह,* खण्ड-45, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1977, पृ. 493
10. चंदूभाई भगूभाई दलाल (संपा.), *महादेवभाईनी डायरी,* खण्ड-14, साबरमती आश्रम ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1974, पृ. 332
11. इंदुलाल याग्निक, *आत्मकथा,* खण्ड 1-2, अरूणाबहन मेहता मेमोरियल ट्रस्ट, 2011, पृ. 67
12. चंदूलाल भगुभाई दलाल (संग्रहकर्ता), *गांधीजीनी दिनवारी,* पृ. 55-56
13. वही, पृ. 58-59
14. वही, पृ. 61
15. वही, पृ. 63
16. इंदुलाल याग्निक, *आत्मकथा,* खण्ड 1-2, पृ. 67
17. नरहरि द्वारकादास पारीख (संपा.), *महादेवभाईनी डायरी,* खण्ड-4, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1950, पृ. 230
18. शंकरलाल द्वारकादास पारीख, *खेड़ा सत्याग्रह,* साबरमती आश्रम मेमोरियल ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1954, पृ. 144-146
19. रामनारायण नागरदास पाठक, *खेड़ा जिला स्वतंत्रता संग्राम,* सरदार वल्लभभाई समाज सेवा ट्रस्ट नडियाद, 1979, पृ. 45-46
20. इंदुलाल याग्निक, आत्मकथा, खण्ड 1-2, पृ. 80
21. चंदूलाल भगुभाई दलाल, *गांधीजीनी दिनवारी,* पृ. 63-65
22. रामनारायण नागरदास पाठक, खेड़ा जिला स्वतंत्रता संग्राम, सरदार वल्लभभाई समाज सेवा ट्रस्ट नडियाद, 1979, पृ. 66
23. इंदुलाल याग्निक, *आत्मकथा,* खण्ड 1-2, पृ. 96
24. *गांधीजीनो अक्षरदेह,* खण्ड-14, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1967, पृ. 72-74
25. रामनारायण नागरदास पाठक, *खेड़ा जिला स्वतंत्रता संग्राम,* पृ. 69
26. चंदूलाल भगुभाई दलाल, *गांधीजीनी दिनवारी,* पृ. 56
27. वही, पृ. 111-112
28. वही, पृ. 117

29. वही, पृ. 124
30. वही, पृ. 126
31. वही, पृ. 273
32. कल्याणजी मेहता एवं ईश्वरलाल देसाई, *दांडीकूच,* सूचना विभाग, गुजरात सरकार, गांधीनगर, 1969, पृ. 71–72
33. चंदूलाल भगुभाई दलाल, *गांधीजीनी दिनवारी,* पृ. 289
34. वही, पृ. 295
35. रामनारायण नागरदास पाठक, *खेड़ा जिला स्वतंत्रता संग्राम,* पृ. 222
36. चंदूलाल भगुभाई दलाल, *गांधीजीनी दिनवारी,* , पृ. 390–391
37. महादेवभाई देसाई, *हरिजनबंधु* (साप्ताहिक पत्र), पुस्तक–3, अंक–13, 9 जून 1935, पृ. 98
38. चंदूलाल भगुभाई दलाल, *गांधीजीनी दिनवारी,* पृ. 18
39. वही, पृ. 24–25
40. वही, पृ. 35
41. वही, पृ. 51
42. वही, पृ. 90
43. वही, पृ. 103
44. वही, पृ. 144
45. वही, पृ. 176–178
46. वही, पृ. 296
47. वही, पृ. 391
48. वही, पृ. 406
49. वही, पृ. 18
50. वही, पृ. 24–25
51. वही, पृ. 90
52. वही, पृ. 178
53. वही, पृ. 391
54. वही, पृ. 90
55. वही, पृ. 103

56. चंदूलाल भगुभाई दलाल, *गांधीजीनी दिनवारी*, पृ. 35
57. वही, पृ. 296
58. वही, पृ. 391

***सहायक प्राध्यापक**
इतिहास एवं संस्कृति विभाग
गूजरात विद्यापीठ अहमदाबाद
****आचार्य**
सरकारी माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
कुंभारा, जि. बनासकांठा (गुजरात)